पश्चिमी घाट में विलुप्त सांप प्रजाति मिली

सांप की एक प्रजाति है जिसके बारे में मान लिया गया था कि वह अब इस धरती पर नहीं है मगर हाल ही में नेशनल सेंटर फॉर बायोलॉजिकल साइन्सेज़, बैंगलुरू के वराद गिरी और उनके साथियों ने इस प्रजाति को खोज निकाला है। दरअसल हुआ यह था कि इस सांप प्रजाति का नमूना संग्रहालय में यह मानकर रख दिया गया था कि यह किसी अन्य प्रजाति की एक किस्म भर है कोई अलग प्रजाति नहीं है।

जब गिरी और उनके साथियों ने पश्चिमी घाट में खोजबीन की तो यह सांप वहीं मिला। यह आम तौर पर पत्तियों के ढेर के नीचे मिट्टी के अंदर रहता है और कभी-कभार ही सतह पर प्रकट होता है। नीले-काले रंग का यह सांप करीब 2 फुट लंबा होता है और इसका सिर बंदूक की गोली के आकार का होता है और आंखें छोटी-छोटी होती हैं। ये सभी लक्षण ज़मीन में बिल बनाकर रहने वाले जंतुओं के लिए अनुकूल माने जाते हैं।

शोधकर्ताओं ने इस प्रजाति को नाम दिया है - *मेलेनोफिडियम खैरी*। इसका अर्थ है 'खैर का काला कवचयुक्त पूंछवाला सांप'। नाम में खैरी शब्द नीलिमकुमार खैर के नाम पर है जो पुणे के सर्प उद्यान के निदेशक हैं। यह नाम सांपों के संरक्षण में इनके योगदान को सम्मान देने हेतु चुना गया है।

मेलेनोफिडियम खैरी की खोज से पहले इस वंश की तीन प्रजातियां ज्ञात थीं और तीनों ही मात्र पश्चिमी घाट क्षेत्र में पाई जाती हैं। इससे पहले करीब डेढ़ सौ साल पहले *मेलेनोफिडियम पंक्टेटम* को खोजा गया था और अब खोजी गई प्रजाति को भी *पंक्टेटम* ही माना जाता था।

इस खोज ने एक बार फिर पश्चिमी घाट की जैव विविधता पर अनुसंधान की ज़रूरत को रेखांकित किया है। यह सही है कि एक नई सर्प प्रजाति की खोज खुशी की बात है मगर अब वैज्ञानिकों के बीच *एम. पंक्टेटम* के अस्तित्व को लेकर चिंता है। पिछले वर्षों में महाराष्ट्र, गोवा और उत्तरी कर्नाटक से जितनी भी *एम. पंक्टेटम* की रिपोर्ट आई हैं वे संभवतः *एम. खैरी* हैं। तो फिर क्या *एम. पंक्टेटम* लुप्त हो चुका है? या इसका इलाका बहुत ही सीमित है?

गिरी ने बताया है कि सच्चाई का पता लगाने के लिए हमें व्यापक क्षेत्र में सर्वेक्षण करना होगा। साथ ही *एम. खैरी* पर भी कई खतरे मंडरा रहे हैं। रबर बागान लगाने के लिए इन सांपों के प्राकृतवास उजाड़े जा रहे हैं। इन्हें विशिष्ट प्राकृतवास की ज़रूरत होती है और आजकल ये सड़कों पर रेंगते हुए मारे जा रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***